जिहाद
और
गैर-मुसलमान

''हमारी यह सम्मति है कि जो कोई इस्लाम के अलावा वर्तमान में मौजूद किसी अन्य धर्म जैसे यहूदीमत, ईसाईयत और अन्य (हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म आदि) में विश्वास रखता है, वह गैर-ईमानवाला है। उससे पश्चाताप करने के लिए आग्रह करना चाहिए। यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो उसकी धर्मत्यागी के समान हत्या कर देनी चाहिए क्योंकि वह कुरान को नकार रहा है।''

—शेख मुहम्मद-अस-सलेह-अल-उथेमिन

(दी मुस्लिम विलीफ पृ. 22)

प्रो. कृष्ण वल्लभ पालीवाल
पीएच. डी.

जिहाद और गैर-मुसलमान ले. प्रो. कृष्ण वल्लभ पालीवाल

प्रथम संस्करण—मार्च 2003,
द्वितीय संस्करण—vDVwCkj 2008

हिन्दू राईटर्स फोरम
129 बी, एम. आई. जी., राजौरी गार्डन,
नई दिल्ली-110027

जिहाद और गैर-मुस्लिम

इस्लामी जिहाद का सच क्या ?

वैसे तो भारत पिछले तेरह सौ वर्षों से इस्लामी जिहादी आंतकवाद से दृढ़ता और परम वीरता के साथ जूझता रहा है, मगर 11/9/01 की अमरीकी में वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर जिहादी हमले के बाद से सारे विश्व का ध्यान इस्लामी कट्टरता की ओर आकर्षित हुआ है। क्योंकि इस जघन्य कार्य में लिप्त सभी मुसलमान थे, इसलिए विश्व के राजनेताओं, विद्वानों और पत्रकारों का ध्यान इस्लाम की ओर आकर्षित हुआ है। उन्होंने इस घृणित, जघन्य एवं अमानवीय जिहादी काण्ड के लिए इस्लामी धर्मान्धता को दोषी ठहराया जो कि इस्लामी जिहाद के नाम पर हत्या, हिंसा और आंतकवाद को प्रोत्साहित करती है। दूसरी तरफ यह भी कहा गया कि इस्लाम तो शान्ति, प्रेम और भाई-चारे का पंथ है। धर्म के नाम पर, इस प्रकार की हिंसा का सच्चे इस्लाम से कोई सज़्बंध नहीं है।

यही बात ईरान के राष्ट्रपति मौहज़्मद खातमी ने ईरान कल्चरल हाउस, दिल्ली में, 27 जनवरी 2003, को कही कि ''**महमूद गज़नवी आक्रान्ता और दुस्साहसी शासक था। उसके भारत पर 17 हमलों का इस्लाम और उसकी विचारधारा से कोई लेना देना नहीं है। गज़नवी ने भारत में जो कुछ किया वह इस्लामी संस्कृति और विचारधारा का प्रतिनिधित्व नहीं करता।'' (दे. जागरण, 28.1.03)**

इन दो विरोधाभासी वक्तव्यों में से सच्चाई को परखने के लिए, यहाँ हमने केवल मुस्लिम विद्वानों द्वारा अनुवादित इस्लाम के धर्म ग्रंथों—कुरान और प्रामाणिक हदीसों के जिहाद और गैर-मुसलमानों सज़्बंधी उद्धरणों को संकलित कर प्रस्तुत किया है। हमारा निवेदन है कि आप इन्हें गज़्भीरता व निष्पक्ष भाव से स्वयं पढ़ें और अन्त में इस बात का निर्णय हम पाठकों पर ही छोड़ते हैं कि क्या इस्लामी जिहाद मुसलमानों को, गैर-मुसलमानों (हिन्दू, बौद्ध, सिख, यहूदी, ईसाई आदि) के प्रति भाई-चारे का संदेश देता है या गैर-मुसलमानों को किसी भी प्रकार इस्लाम में धर्मान्तरित कर या समाप्त कर, विश्वभर में इस्लामी राज्य स्थापित करना चाहता है ? यहाँ हमने सभी आयतें 'कुरान मजीद' अनु. मुहज़्मद फारुक खाँ, प्रकाशक मक्तवा अल-हस्नात, रामपुर (1980) से ली हैं।

1. अल्लाह का मानव समाज को 'ईमान' वाले और 'काफिरों में बाँटना

1. ''इन (गैर-मुसलमानों) पर 'शैतान' छा गया है और उसने ऐसा कर दिया है कि ये अल्लाह की याद को भुला बैठे। ये 'शैतान' की पार्टी वाले हैं। सुन लो 'शैतान' की पार्टी ही घाटा उठाने वाला हैं।'' **(58 : 19, पृ. 1018)**

2. ''वही लोग हैं जिनके दिलों में उसने 'ईमान' अंकित कर दिया है---- ---अल्लाह उनसे राजी हुआ, और वे उससे राजी हुए। ये ईमानवाले 'अल्लाह की पार्टी' वाले हैं। सुन लो अल्लाह की पार्टी वाले ही सफलता पाने वाले हैं।'' **(58 : 22, पृ. 1019)**

3. ''और हम में कुछ तो 'मुस्लिम' हैं और हममें कुछ मार्ग से फिरे हुए हैं। तो जो 'मुस्लिम' हुए, उन्होंने तो भलाई का मार्ग पसन्द कर लिया। रहे वे लोग जो मार्ग से फिरे हुए हैं, तो वे 'जहन्नम' का ईंधन हुए। '' **(72 : 14-15, पृ. 1086)**

2. 'ईमान' वाले आपास में भाई-भाई

1. ''और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मजबूती से पकड़ो और फूट में न पड़ो। अल्लाह की उस कृपा को याद करो जो उसने तुम पर की है : तुम एक-दूसरे के शत्रु थे, तो उसने तुह्मारे दिलों को परस्पर एक-दूसरे से जोड़ दिया तो तुम उसकी कृपा से भाई-भाई हो गए।'' **(3 : 103, पृ. 201)**

2. ''और यदि 'ईमान' वालों के दो गिरोह परस्पर लड़ पड़ें, तो उनके बीच सुलह-सफ़ाई करा दो।'' **(49 : 9, पृ. 950)**

3. 'ईमान' वाले तो भाई-भाई हैं। तो अपने दो भाइयों के बीच सुलह-सफ़ाई करा दो और अल्लाह का डर रखो ताकि तुम पर दया की जाए।'' **(49 : 10, पृ. 950)**

4. ''तो यदि ये 'तौबा' कर लें और 'नमाज' कायम करें और 'जकात' दें, तो तुह्मारे 'दीनी' भाई हैं। और जानने वालों के लिए हम अपनी 'आयतें' खोल-खोलकर बयान करते हैं।'' **(9 : 11, पृ. 369)**

5. ''मुहज़्मद अल्लाह के 'रसूल' हैं। और जो लोग उनके साथ हैं वे 'काफिरों' के मुकाबले में कठोर और आपस में दयालु हैं।'' **(48 : 29, पृ. 945)**

3. 'ईमान' न लाने वाले 'काफ़िरों' (गैर-मुसलमानों) को सज़ा

1. ''जो 'काफिर' हैं, ज़ालिम वही हैं।'' **(2 : 254, पृ. 171)**

2. ''जो कोई अल्लाह और उसके 'फिरिश्तों' और उसके 'रसूलों' और 'जिबरील' और 'मीकाइल' का शत्रु हुआ तो ऐसे 'काफ़िरों' का शत्रु अल्लाह है।'' **(2 : 98, पृ. 141)**

3. ''निश्चय ही (भूमि पर) चलने वाले सबसे बुरे जीव अल्लाह की दृष्टि में वे लोग हैं, जिन्होंने 'कुफ्र' किया फिर वे 'ईमान' नहीं लाते।'' **(8 : 55, पृ. 357)**

4. ''और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जिसे उसके 'रब' की 'आयतों' के द्वारा चेताया जाए, और फिर वह उनसे मुँह फेर ले। निश्चय ही हमें ऐसे अपराधियों से बदला लेना है।'' **(32 : 22, पृ. 736)**

5. ''और 'काफिरों' के लिए उसने दुखदायिनी यातना तैयार कर रखी है।'' **(33 : 8, पृ. 746)**

4. केवल अल्लाह को पूजो

1. ''हम तुमसे और अल्लाह के सिवा जिसे भी तुम पूजते हो उससे अलग हैं। हम तुह्में नहीं मानते। और हमारे तुह्मारे बीच सदा के लिए शत्रुता और विद्वेष उभर आया है जब तक कि तुम अकेले अल्लाह पर 'ईमान' न लाओ—बस यह है कि इब्राहीम ने अपने बाप से इतनी बात कह दी थी कि मैं तुह्मारे लिए क्षमा की प्रार्थना अवश्य कर दूँगा और अल्लाह के आगे तुह्मारे लिए कुछ भी करना मेरे बस में नहीं है।'' **(60 : 4, पृ.1030)**

2. ''वही है जिसने अपने 'रसूल' को मार्गदर्शन और सच्चे 'दीन' (सत्य धर्म) के साथ भेजा, ताकि उसे समस्त 'दीन' पर प्रभुत्व प्रदान करे, चाहे 'मुश्रिकों (मूर्त्ति पूजकों) को यह नापसन्द ही क्यों न हो।'' **(9 : 33, पृ. 373)**

3. पैगज़्बर ने कहा ''अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए उनके मनों में अल्लाह का डर कायम करने के लिए दबाव डालने में कमी मत करो।'' **(मिश्कत, 61)**

5. अल्लाह और मुहज़्मद दोनों पर ईमान लाओ

1. ''ईमान' वाले तो बस वे हैं जो अल्लाह पर और उसके 'रसूल' पर 'ईमान' लाए फिर संदेह में नहीं पड़े, और अपने मालों और अपनी जानों को अल्लाह की राह में लगा दिया। यही लोग सच्चे हैं।'' **(49 : 15, पृ. 952)**

2. ''अल्लाह और उसके 'रसूल' के हुक्म पर चलो, और आपस में न झगड़ो, नहीं तो तुम में कमज़ोरी आ जाएगी और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी; और धैर्य से काम लो!'' **(8 : 46, पृ. 355)**

3. ''हे वे लोगो जो 'ईमान' लाये हो! अल्लाह का हुक्म और 'रसूल' का हुक्म मानो, और अपना किया—धरा बरबाद न करो।'' **(47 : 33, पृ. 934)**

4. ''यह इसलिए कि इन लोगों ने अल्लाह और उसके 'रसूल' का विरोध किया और जो कोई अल्लाह और उसके 'रसूल' का विरोध करे, तो निस्संदेह अल्लाह भी कड़ी सज़ा देने वाला है।'' **(8 : 13, पृ. 351)**

5. ¶कह दो : अल्लाह और 'रसूल' की आज्ञा का पालन करो। फिर यदि वे मुँह मोड़ें लो जान लें कि अल्लाह 'काफिरों' से प्रेम नहीं करता।¸ **(3 : 32, पृ. 190)**

6. ¶ईमान' लाओ 'अल्लाह' और उसके 'रसूल' पर।¸ **(57 : 7 पृ., 1009)**

6. पैगम्बर मुहम्मद पर ईमान लाओ

1. ¶'नमाज' कायम करो और 'जकात' दो और 'रसूल' का हुक्म मानो ताकि तुम पर दया की जाए।¸ **(24 : 56, पृ. 632)**

2. ¶(हे मुहम्मद!) हमने तुम्हें लोगों के लिए 'रसूल' बनाकर भेजा है और (इस पर) गवाह की हैसियत से अल्लाह काफ़ी है। जिसने 'रसूल' का आदेश माना वास्तव में उसने अल्लाह का आदेश माना।¸ **(4 : 79-80, पृ. 235)**

3. ¶मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं है परन्तु वे अल्लाह के 'रसूल' और 'नबियों' के समापक (यानी आखिरी नबी) हैं।¸ **(33 : 40, पृ. 754)**

4. ¶उसके 'रसूल' पर ईमान लाओ।¸ **(57 : 28, पृ. 1013)**

5. ''वह जो पैगम्बर मुहम्मद की आज्ञा का पालन नहीं करता है वह अल्लाह की अवज्ञा करता है।¸ **(मिश्कत, 144)**

6. ''पैगम्बर मुहम्मद ने कहा कि तुममें से कोई भी ईमानवाला नहीं है जब तक कि मैं (मुहम्मद) उसे, अपने पुत्र, अपने पिता और समस्त मानव जाति से अधिक प्यारा न होऊँ।¸ **(मुस्लिम, खंड-1 : 71, पृ. 37)**

7. अल्लाह के अलावा किसी अन्य को मत पूजो

1. ¶और अल्लाह के सिवा किसी ऐसे को न पुकार, जो न तुझे लाभ पहुँचा सके और न हानि, यदि तूने ऐसा किया तो तू जालिमों में से होगा।¸ **(10: 106, पृ. 411)**

2. ¶(कहा जाएगा); निश्चय ही तुम और वह जिसे तुम अल्लाह के सिवाय पूजते थे, 'जहन्नम' का ईंधन हो। तुम अवश्य उसके घाट उतरोगे।¸ **(21 : 98, पृ. 585)**

3. ¶और अल्लाह को छोड़कर वे उसको पूजते हैं जो न उन्हें लाभ पहुँचा सकता है और न हानि पहुँचा जा सकता है। और 'काफ़िर' अपने 'रब' के मुकाबले में (विद्राहियों का) पृष्ठ-पोषक बना हुआ है।¸ **(25 : 55, पृ. 644)**

4. ¶निस्संदेह जो लोग 'ईमान' लाए, फिर 'कुफ्र' किया, फिर 'ईमान' लाए, फिर 'कुफ्र' किया, फिर कुफ्र में बढ़ते चले गए, अल्लाह उनको कभी क्षमा न करेगा और न उन्हें राह दिखाएगा।¸ **(4 : 137, पृ. 246)**

5. ¶निश्चय ही उन लोगों ने 'कुफ्र' किया जिन्होंने कहा कि अल्लाह मसीह सुत मरियम ही है, हालाँकि मसीह ने कहा था—हे 'इस्राईल' की सन्तान! अल्लाह की 'इबादत' करो, जो मेरा 'रब' भी है और तुझारा 'रब' भी। जो कोई अल्लाह के साथ (किसी को) शरीक़ करेगा, उस पर अल्लाह ने 'जन्नत' हराम कर दी है।¸ vkSj mldk fBdkuk tgUue gS¸ **(5 : 72, पृ. 271)**

6. ¶यह पूछने पर कि अल्लाह की दृष्टि में सबसे बड़ा पाप क्या है? पैगज़्बर ने कहा—'अल्लाह के साथ किसी अन्य को शामिल करना'। **(मुस्लिम, खंड-1 % 156] i`"B 60)**

8. इस्लाम ही सच्चा धर्म

1. 'दीन' तो अल्लाह का इस्लाम है¸ **(3 : 19, पृ. 188)**

2. ¶जो 'इस्लाम' के सिवा कोई और 'दीन' चाहेगा तो वह कभी उससे (अल्लाह से) क़ूबूल नहीं किया जाएगा और वह 'आख़िरत' में टोटा पाने वालों में से होगा।¸ **(3 : 85, पृ. 198)**

3. ¶मैंने तुझारे लिए 'इस्लाम' को दीन की हैसियत से पसन्द किया।¸ **(5 : 3, पृ. 257)**

4. ¶जिन लोगों ने 'कुफ्र' किया और अल्लाह के मार्ग से रोका और 'काफ़िर' ही रहकर मर गए, अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा न करेगा।¸ **(47: 34, पृ. 934)**

9. ^काफ़िर* (गैर-मुसलमान) ईमानवालों के शत्रु

1. ¶निस्संदेह 'काफ़िर' तुझारे ('ईमान' वालों के) खुले दुश्मन हैं।¸ **(4 : 101, पृ. 239)**

2. ¶निस्संदेह अल्लाह ने 'क़ाफिरों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रDज़ी है।¸ **(4 : 102, पृ. 240)**

3. ¶हे 'ईमानवालो'! 'मुशिरक़' (मूर्त्तिपूजक) तो नापाक हैं। तो इस वर्ष के पश्चात् ये 'मस्जिदे हराम' ('काबा') के पास फटकने न पाऐं।¸ **(9 : 28, पृ. 371)**

4. ¶'मुशिरक़' स्त्रियों से जब तक वे 'ईमान' न लाऐं विवाह न करो। ईमानेवाली एक 'लौंडी' एक 'मुशिरक़' स्त्री से अच्छी है, यद्यपि वह तुझें भली लगे। और 'मुशिरक़' पुरुषों से (अपनी स्त्रियों का) विवाह न करो जब तक कि वे 'ईमान' न लाएँ। 'ईमानवाला' एक 'गुलाम' एक 'मुशिरक़ ' से अच्छा है, यद्यपि वह भला लगे।¸ **(2: 221, पृ. 163)**

5. ¶पैगज़्बर ने भगवा रंग में रंगे कपड़ों को पहनने के लिए मना किया। (क्योंकि) ऐसे रंग के कपड़े प्राय: गैर-मुसलमानों (हिन्दुओं) द्वारा पहने जाते हैं। अत: उन्हें मत पहनो, उन्हें जला दो।¸ **(मुस्लिम [kaM % 35175_ 5173, i`- 1377&78)**

10. गैर-मुसलमानों से मित्रता न करो

1. ¶ईमान' वालों को चाहिए कि वे ईमानवालों के विरुद्ध 'काफ़िरों' को अपना संरक्षक-मित्र न बनाएँ और जो कोई ऐसा करेगा तो उसका अल्लाह से कोई भी नाता नहीं।¸ **(3 : 28, पृ. 189)**

2. ¶हे 'ईमान' वालो! अपनों के सिवा दूसरों को अपना भेदी न बनाओ, ये तुम्हें क्षति पहुँचाने में कुछ भी उठा नहीं रखेंगे.....इनका द्वेष तो इनके मुँह से व्यक्त हो चुका है और जो कुछ इनके सीने छिपाए हुए हैं, वह इससे भी बढ़कर है।¸ **(3 : 118, पृ. 203)**

3. ¶हे 'ईमान' वालो! ईमानवालों के मुकाबले में 'काफ़िरों' को मित्र न बनाओ। क्या तुम अपने ही विरुद्ध अल्लाह के लिए एक स्पष्ट तर्क संचित करना चाहते हो?¸ **(4 : 144, पृ. 247)**

4. ¶हे 'ईमान' वालो! तुम 'यहूदियों' और 'ईसाइयों' को मित्र न बनाओ। ये आपस में एक दूसरे के मित्र हैं और जो कोई तुममें उनको मित्र बनाएगा, वह उन्हीं में से होगा।¸ **(5 : 51, पृ. 267)**

5. ¶हे 'ईमान' लानेवालो! तुमसे पहले जिन को 'किताब' दी गई थी, जिन्होंने तुम्हारे 'दीन' की हंसी और खेल बना लिया है उन्हें, और 'काफ़िरों' को अपना मित्र न बनाओ। और अल्लाह से डरते रहो, यदि तुम 'ईमान' वाले हो।¸ **(5 : 57, पृ. 268)**

6. ¶हे 'ईमान' लाने वालो! अपने बापों और अपने भाइयों को अपना मित्र न बनाओ यदि वे 'ईमान' की अपेक्षा 'कुफ्र' को पसंद करें। और तुममें से जो कोई उनसे मित्रता का नाता जोड़ेगा, तो ऐसे ही लोग ज़ालिम होंगे।¸ **(9 : 23, पृ. 370)**

7. ¶हे 'ईमान' लाने वालो! तुम मेरे दुश्मनों को और अपने दुश्मनों को अपना न बनाओ।¸ **(60 : 1, पृ. 1029)**

11. गैर-मुस्लिमों के प्रति अल्लाह का पक्षपात

1. ¶अल्लाह 'काफ़िरों' को अपने घेरे में लिए हुए है।¸ **(2 : 19, पृ. 129)**

2. ¶वह जिसे चाहता है, अपनी दयालुता के लिए ख़ास कर लेता हैA¸ **(3 : 74, पृ. 196)**

3. ¶अल्लाह ज़ालिमों को सीधा मार्ग नहीं दिखाया करता।¸ **(2 : 258, पृ. 173)**

4. ¶अल्लाह उसका तुमसे हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहेगा क्षमा करेगा, जिसे चाहेगा यातना देगा, अल्लाह को हर चीज का सामर्थ्य प्राप्त है।¸ **(2 : 284, पृ. 179)**

5. ¶अल्लाह उसे मार्ग नहीं दिखाता जो झूंठा और अत्यन्त 'कुफ्र' करनेवाला होA¸ **(39 : 3, पृ. 829)**

6. ¶अल्लाह उन लोगों को मार्ग नहीं दिखाता जो अवज्ञाकारी हैं।¸ **(9 : 24, पृ. 371)**

7. ¶अल्लाह 'काफ़िर' लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।¸ **(9 : 37, पृ. 374)**

8. ¶फिर अल्लाह जिसे चाहता है, भटका देता है, और जिसे चाहता है, मार्ग पर लगा देता है।¸ **(14 : 4, पृ. 464)**

9. ¶फिर हमने उनके बीच 'क़ियामत' के दिन तक के लिए वैमनस्य व द्वेष की आग भड़का दी।¸ **(5 : 14, पृ. 260)**

12. गैर-मुसलमानों के लिए अपमान और 'जहन्नम' की आग

1. ¶जिन लोगों ने 'कुफ्र' किया और हमारी 'आयतों' को झुठलाया वही आग (^जहन्नम* में रहने) वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।¸ **(2 : 39, पृ. 132)**

2. ¶जिन लोगों ने हमारी 'आयतों' का इंकार किया, उन्हें हम जल्द अग्नि में झोंक देंगे। जब उनकी खालें पक जाऐंगी तो हम उन्हें और दूसरी खालों से बदल देंगे ताकि वे यातना का रसास्वाद कर लें।¸ **(4 : 56, पृ. 231)**

3. ¶जिन लोगों ने कुफ्ऱ किया, यदि उनके पास वह सब कुछ हो जो धरती में है और उतना ही उसके साथ और भी हो, कि वे उसे देकर 'क़ियामत' के दिन यातना से बच जाऐं, तब भी वह उनसे क़बूल नहीं किया जाएगा। उनके लिए दुखदायिनी यातना है।¸ **(5 : 36, पृ. 264)**

4. ¶वे (^काफ़िर*) चाहेंगे कि (^जहन्नम* की) आग से निकल जाऐं, परन्तु वे उससे निकल नहीं सकेंगे। उनके लिए स्थायी यातना है।¸ **(5 : 37, पृ. 264)**

5. ¶जिसे अल्लाह मार्ग दिखाए, वही मार्ग पाने वाला है; और जिसे वह भटका दे, ऐसे लोगों के लिए उसके सिवा तू किसी को संरक्षक-मित्र नहीं पा सकता, 'क़ियामत' के दिन हम उन्हें औंधे मुंह इस दशा में घसीट लाऐंगे कि वे अंधे, गूंगे और बहरे होंगे, उनका ठिकाना 'जहन्नम' है, जब कभी (उसकी आंच) धीमी होने लगेगी, हम उसे उनके लिए और अधिक दहका देंगे।¸ **(17 : 97, पृ. 520)**

6. ¶पकड़ो इसको और इसे जकड़ लो, फिर ('जहन्नम' की) भड़कती आग में उसे डाल दो, फिर एक जंजीर में जो सत्तर हाथ लम्बी है, इसे बांध दो। यह महिमाशाली अल्लाह पर 'ईमान' नहीं रखता था।¸ **(69 : 30-33, पृ. 1071)**

7. ¶(पैगम्बर) ने कहा....."जो जान बूझकर मेरे बारे में झूठ बोलता है, उसका ठिकाना 'जहन्नम' में है।" **(मिश्कत, 198)**

8. ¶पैगम्बर ने कहा कि "मुनाफ़िक (मुस्लिम) और गैर-मुस्लिम 'जहन्नम' में लोहे के हथोड़ों से पीटे जाऐंगे। ऐसा घन कि जिससे यदि पहाड़ पर भी चोट की जाए तो वह चूरा बन जाए।" **(मिश्कत, 126, 131)**

9. ¶पैगम्बर ने कहा "गैर-मुसलमान की कबर पर निन्नयानवें अजगरों का आधिपत्य रहता है है वे 'क़ियामत' के दिन तक लगातार उसे डसते रहते हैं और नौंचते रहते हैं। ये अजगर इतने जहरीले हैं कि यदि इनमें से एक भी पृथ्वी पर फुन्कार मार दे तो उस जगह कभी भी कोई वनस्पति नहीं उगेगी।" **(मिश्कत, 134)**

13. जहन्नम का स्वरुप

1. ¶और निश्चय ही 'जहन्नम' उन सब के वादे की जगह है। उसके सात द्वार हैं, हर द्वार के लिए उन (लोगों) में से एक निश्चित हिस्सा है।¸ **(15 : 43-44, पृ. 477)**

2. ¶वह एक वृक्ष है जो भड़कती हुई आग ('जहन्नम') की तह से निकलता है। उसके, गाभे (फसल) ऐसे हैं जैसे शैतानों के सिरA तो ये (^जहन्नम* के लोग) उसे खाऐंगे, और उसी से (अपने) पेट भरेंगे। फिर

इसके ऊपर से पीने के लिए उन्हें खौलता हुआ पानी मिलेगा और उसके बाद, इनकी वापिसी उसी भड़कती हुई आग ('जहन्नम') की ओर होगी।¸ **(37 : 64-68, पृ. 802-803)**

3. ¶उनके ऊपर आग की छतरियाँ होंगी और उनके नीचे से भी (आग की) छतरियाँ होंगी। यही है जिससे अल्लाह अपने बन्दो को डराता है तो हे मेरे बन्दो! मेरा डर रक्खो।¸ **(39 : 16, पृ. 832)**

4. हे 'ईमान' लाने वालो! अपने आपको और अपने लोगों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर है जिस पर कठोर और प्रबल 'फ़िरिश्ते' नियुक्त हैं।¸ **(66 : 6, पृ. 1054)**

5. ¶उन लोगों के लिए जिन्होंने अपने 'रब' के साथ 'कुफ्र ' किया 'जहन्नम' की यातना है, और बहुत ही बुरी जगह है जहाँ पहुंचे! जब ये उस ('जहन्नम') में डाले जावेंगे तो ये उसकी भीषण गूंज सुनेंगे और वह भड़क रही होगी, ऐसा लगता है कि जोश के मारे फट पड़ेगी।¸ **(67 : 6-8, पृ. 1059)**

6. ¶कदापि नहीं! निस्संदेह वह ('जहन्नम') ज्वाला फेंकने वाली है जो खींच लेने वाली है (पिंडली के) मांस को; वह हर उस व्यक्ति को बुलाएगी, जिसने पीठ फेरी और मुंह मोड़ा।¸ **(70 : 15-17, पृ. 1076)**

7. ¶मैं जल्द ही उसे 'सक़र' (दाह) में झोंक दूंगा। और तुझें क्या ज़बर कि सक़र ('जहन्नम') क्या है? न रहने देगी, न जाने देगी, शरीर को झुलसा देने वाली है। उस पर उन्नीस नियुक्त हैं और हमने उस आग पर रहने वालों को 'फ़िरिश्ते' ही बनाया है।¸ **(74 : 26-31, पृ. 1098)**

8. ¶कितने ही चेहरे उस दिन ('क़ियामत') सहमे हुए होंगे, परिश्रम करते थके-थके, दहकती आग में पड़ेंगे, उन्हें एक खोलते स्रोत का (is;) पिलाया जाएगा, उनके लिए खाने को कुछ न होगा बस एक 'जरीअ' (सूखा कांटेदार और ज़हरीला पौधा) होगा जो न (शरीर को) पुष्ट करेगा और न भूख में कुछ काम आएगा।¸ **(88 : 2-7, पृ. 1154)**

14. जिहाद क्या है?

1. 'जिहाद' (जान तोड़-कोशिश) करो अल्लाह (के मार्ग) में ठीक-ठीक जिहाद।¸ **(22 : 78, पृ.601)**

2. ¶अल्लाह की राह में युद्ध करो और जान लो कि अल्लाह सुनने और जानने वाला है।¸ **(2 : 244, पृ. 169)**

3. ¶जो अल्लाह के मार्ग में मारे गए, उन्हें मरा हुआ न समझो, बल्कि वे अपने 'रब' के पास जीवित हैं, रोज़ी पा रहे हैं।¸ **(3 : 169, पृ. 211)**

4. ¶उसकी (अल्लाह की) राह में 'जिहाद' करो ताकि तुम सफल हो जाओ।¸ **(5 : 35, पृ. 263)**

5. ¶तो तुम अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो—तुम पर अपने सिवा किसी और का दायित्व नहीं—और 'ईमान' वालों को भी इसके लिए उभारो! हो सकता है अल्लाह 'काफिरों' का ज़ोर तोड़ दे।¸ **(4 : 84, पृ. 236)**

6. पैगज़्बर से पूछने पर कि सर्वोत्तम काम कौन-सा है? तो उसने जवाब दिया 'अल्लाह में विश्वास'। उसके बाद क्या? पैगज़्बर ने कहा **'अल्लाह के लिए जिहाद'। (मुस्लिम, खंड-1 % 148] i`- 58)**

15. अल्लाह के जिहाद के लिए आदेश

1. ¶हे 'नबी'! 'काफ़िरों' और 'मुनाफिकों' के साथ 'जिहाद' करो और उन पर सख़्ती करो, और उनका ठिकाना 'जहन्नम' है।¸ **(66: 9, पृ. 1055)**

2. ¶तो 'काफ़िरों' की बात न मानना, और इस ('कुरआन') से तुम उनसे बड़ा 'जिहाद' करो।¸ **(25: 52, पृ. 643)**

3. ¶तुम पर युद्ध फ़र्ज़ किया गया, और वह तुम्हें अप्रिय है—और हो सकता है एक चीज़ तुम्हें बुरी लगे और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो, और हो सकता है, कि एक चीज़ तुम्हें प्रिय हो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।¸ **(2 : 216, पृ. 162)**

4. ¶फिर, जब हराम महीने बीत जाएं, तो 'मुश्रिकों' को जहाँ—कहीं पाओ कत्ल करो, और उन्हें पकड़ो, और उन्हें घेरो, और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। यदि वे 'तौबा' कर लें और 'नमाज़' क़ायम करें और 'ज़कात' दें, तो उनका मार्ग छोड़ दो।¸ **(9 : 5, पृ. 368)**

5. 'हे ईमानलाने वाले!' क्या मैं तुम्हें एक ऐसा व्यापार बताऊं जो तुम को एक दु:ख भरी यातना से बचा ले? 'ईमान' रखो अल्लाह और उसके 'रसूल' पर और 'जिहाद' करो अल्लाह के मार्ग में अपने मालों और अपनी जानों से, यह तुम्हारे लिए उत्तम है, यदि तुम ज्ञान रखते हो। वह तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और तुम्हें ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रहीं होगीं और अच्छे-अच्छे घरों में, जो सदा रहने के बागों में होंगे। यह है बड़ी सफलता।¸ **(61 : 10-12, पृ. 1035)**

6. ¶हे 'नबी!' 'काफ़िरों' और 'मुनाफ़िक़ों' से 'जिहाद' करो'! और उनके साथ सख़्ती से पेश आओ। उनका ठिकाना 'जहन्नम' है और वह क्या ही बुरा ठिकाना है।¸ **(9 : 73, पृ. 380)**

16. जिहाद का उद्देश्य—अन्य धर्मों को समाप्त कर, सारे विश्व में इस्लामी राज्य स्थापित करना

1. ¶और उनसे युद्ध करो जहाँ तक कि ^फ़ितना* शेष न रहे और 'दीन' अल्लाह का हो जाए।¸ **(2 : 193, पृ. 158)**

2. ¶और तुम उनसे लड़ो यहाँ तक कि ^फ़ितना* (उपद्रव) बाकी न रहे और 'दीन' (धर्म) पूरा-का-पूरा अल्लाह के लिए हो जाए।¸ **(8 : 39, पृ. 354)**

3. ¶'किताब वाले' जो न अल्लाह पर 'ईमान' लाते हैं और न 'आख़िरत', पर और न उसे 'हराम' करते हैं जिसे अल्लाह और उसके 'रसूल' ने 'हराम' ठहराया है और वे न सच्चे 'दीन' को अपना 'दीन' बनाते हैं, उनसे लड़ो यहाँ तक कि वे अप्रतिष्ठित होकर अपने हाथ से ज़िज़या देने लगें।¸ **(9 : 29, पृ. 372)**

4. ¶वही है जिसने अपने 'रसूल' को मार्ग दर्शन और सच्चे 'दीन' (सत्य धर्म) के साथ भेजा, ताकि उसे समस्त 'दीन' पर प्रभुत्व प्रदान करे, चाहे मुश्रिकों को नापसन्द ही क्यों न होA¸ **(9 : 33, पृ. 373)**

5. ¶सबसे आखिरी वक्तव्य जो मुहम्मद ने दिया वह था कि ''हे अल्लाह! यहूदियों और ईसाईयों को समाप्त कर दे। वे अपने पैगम्बरों की कबरों पर चर्चें (पूजा घर) बनाते हैं। अरेबिया में दो धर्म नहीं रहेंगे।'' (पहले चार खलीफों के समय में यह नीति पूरी तरह अपनाई गई और सभी गैर-मुसलमान अरेबिया से बाहर निकाल दिए गए।)'' **(मलिक, 511 : 1588)**

6. ¶ओ अल्लाह! तूने जो मुझसे वायदा किया था वह सब दिला। ओ अल्लाह! यदि ये थोड़े से मुसलमान मारे गए तो संसार में तुझ्हारी पूजा करने वाला कोई न होगा।'' **(मुस्लिम खंड-3 % 4360] i`-1158)**

17. जिहाद कैसे करें ?

1. ¶जो लोग 'ईमान' लाए वे अल्लाह के मार्ग में युद्ध करते हैं और जिन लोगों US 'कुफ्र' किया वे तागूत (मूर्तियों) के मार्ग में युद्ध करते हैं। तो तुम शैतान के साथियों से लड़ो।'' **(4 : 76, पृ. 234)**

2. ¶तो उन में से किसी को साथी न बनाना जब तक कि वे अल्लाह की राह में 'हिज़रत' न करें; और यदि वे इससे फिर जाएं तो उन्हें जहाँ कहीं पाओ पकड़ो और उनका वध करो और उनमें से किसी को साथी और सहायक न बनाना।'' **(4 : 89, पृ. 237)**

3. ¶जो लोग अल्लाह और उसके 'रसूल' से लड़ते हैं और धरती में बिगाड़ पैदा करने के लिए दौड़ धूप करते हैं, उनकी सज़ा यही है कि बुरी तरह कत्ल किए जाएं या सूली पर चढ़ाये जाएं, या उनके हाथ और उनके पांव विपरीत दिशाओं से काट डाले जाएं या उनको देश निकाला दे दिया जाए। यह रुसवाई तो उनके लिए दुनियां में है और 'आख़िरत' में उनके लिए बड़ी यातना है।'' **(5 : 33, पृ. 263)**

4. ¶तो तुम उन लोगों को जो 'ईमान' ला चुके हैं, जमाए रखो। मैं अभी 'काफ़िरों' के दिलों में रौब डाले देता हूँ। तो तुम उनकी गरदनों पर मारो और उनके हर जोड़ पर चोट लगाओ।'' **(8 : 12, पृ. 350)**

5. ¶हे 'ईमान' वालो! जब तुम एक सेना के रूप में 'काफ़िरों' से भिड़ो तो उनसे पीठ न फेरो।'' **(8 : 15, पृ. 351)**

6. ¶हे 'नबी'! ईमान' वालों को लड़ाई पर उभारो। यदि तुममें बीस जमे रहने वाले होंगे तो वे दो सौ पर भी प्रभुत्व प्राप्त करेंगे, और यदि तुम में सौ हों तो वे एक हज़ार 'काफ़िरों' पर भारी रहेंगे क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो समझ-बूझ नहीं रखते।'' **(8 : 65, पृ. 358)**

7. ¶तो यदि तुम में सौ जमे रहने वाले होंगे तो वे दो सौ पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे और यदि तुम में हज़ार होंगे तो दो हज़ार पर अल्लाह के हुक्म से भारी रहेंगे।'' **(8 : 66, पृ. 358)**

8. ¶उन ('काफ़िरों') से लड़ो! अल्लाह तुझ्हारे हाथों उन्हें यातना देगा, और उन्हें रुसवा करेगा और उनके मुक़ाबले में तुझ्हारी सहायता करेगा।'' **(9 : 14, पृ. 369)**

9. ¶हे 'ईमान' लाने वालो! उन काफ़िरों से लड़ो जो तुझ्हारे आसपास हैं, और चाहिए कि वे तुम में सज़्ती पाऐं।'' **(9 : 123, पृ. 391)**

10. ¶अब जब 'कुफ्र' करने वालों से तुझ्हारी मुठ-भेड़ हो तो गरदनें मारना, यहाँ तक कि जब तुम उन्हें कुचल चुको, तो बन्धनों में जकड़ो।'' **(47 : 4, पृ. 929)**

11. ¶**और** उन लोगों को जो अल्लाह के मार्ग में मारे जाते हैं, मुरदा न कहो, वे तो जीवित हैं, परन्तु तुझ्हें इसकी अनुभूति नहीं होती।'' **(2 : 154, पृ. 150)**

12. ¶किसी 'नबी' के लिए यह सज़्भव नहीं कि उसके पास कैदी हों जब तक कि वह धरती में (विरोधी दल को) कुचल कर रख न दे।'' **(8 : 67, पृ. 359)**

13. ¶तुमने उन्हें कत्ल नहीं किया, बल्कि अल्लाह ने उन्हें कत्ल किया।'' **(8 : 17, पृ. 351)**

14. ¶अल्लाह ने मुहज़्मद को बताया कि उसने जॉन-दि-बेप्टिस्ट से बदला लेने के लिए सत्तर हजार लोगों का कत्ल किया और उसके नाती से बदला लेने के लिए सत्तर हजार सत्तर का कत्ल करेगा।'' **(हदीस-ए-कुदसी, 22 : 17)**

18. गैर-मुसलमानों की बस्तियों का विनाश व देश निकाला जिहाद का अंग

1. ¶और जब हम किसी बस्ती को विनष्ट करने का इरादा कर लेते हैं तो हम वहाँ के सुखभोगी लोगों को हुक्म देते हैं, फिर वे उसमें अवज्ञा करने लग जाते हैं, तब उस बस्ती पर वह (यातना की) बात साबित हो जाती है, फिर हम उसे बिल्कुल जड़ से उखाड़ फेंकते हैं।'' **(17 : 16, पृ. 509)**

2. ¶**और** हराम (असज़्भव) था हर उस बस्ती के लिए (पलटना) जिसको हमने विनष्ट कर दिया था। निश्चय ही वे पलटने वाले न थे।¸ **(21 : 95, पृ. 584)**

19. अपने जान-माल सहित जिहाद करो

1. ¶अल्लाह के मार्ग में खर्च करो, और अपने-आप को तबाही में न झोंको।¸ **(2 : 195, पृ. 158)**

2. ¶निश्चय ही जो लोग 'ईमान' लाए और 'हिजरत' की और अल्लाह के मार्ग में अपनी जान और अपने माल से 'जिहाद' किया और जिन लोगों ने (हिजरत करने वालों को) जगह दी और सहायता की; वे एक-दूसरे के संरक्षक-मित्र हैं। और जो लोग 'ईमान' ले आए परन्तु 'हिज़रत' नहीं की, तो उनसे तुज़्हारा संरक्षण (और मैत्री आदि) का कोई संबंध नहीं है जब तब कि वे 'हिजरत' न करें। परन्तु यदि वे 'दीन' (धर्म) के मामले में तुमसे मदद चाहें तो मदद करनी तुज़्हारे लिए आवश्यक है। परन्तु किसी ऐसे गिरोह के मुक़ाबले में नहीं जिससे तुज़्हारी संधि हो।¸ **(8 : 72, पृ. 360)**

3. ¶निकल पड़ो, चाहे हल्के हो या बोझल, और अपने मालों और जानों के साथ अल्लाह के मार्ग में 'जिहाद' करो। यह तुज़्हारे लिए अच्छा है यदि तुम जानो।¸ **(9 : 41, पृ. 375)**

4. ¶जो लोग अल्लाह पर और 'अन्तिम दिन' पर 'ईमान' रखते हैं वे कभी तुमसे इसकी इज़ाज़त नहीं मांगेंगे कि अपने माल और अपनी जानों के साथ 'जिहाद' न करें। vYykg mu yksxksa dks tkurk gS tks Mjus okys gSaA¸ **(9 : 44, पृ. 376)**

5. ¶जहाँ तक हो सके तुम लोग (सेना) शक्ति और तैयार बंधे हुए घोड़े उनके लिए तैयार रक्खो, ताकि इस के द्वारा अल्लाह के शत्रुओं और अपने शत्रुओं और इनके सिवा औरों को भयभीत कर दो जिन्हें तुम नहीं जानते।¸ **(8 : 60, पृ. 357)**

6. ¶पैगज़्बर ने कहा ''जो कोई भी जिहाद की सहायता के लिए जितना भी खर्च करता है, अल्लाह उसके बदले पुरस्कार रूप में उससे सात&सौ गुना ज्यादा देगा।'' **(frjfeth, खंड-1, पृ. 697)**

7. ¶पैगज़्बर ने कहा ''हे लोगो! घुड़सवारी और तीरंदाज़ी सीखो, सावधान रहो। तीरंदाजी का अर्थ है शक्ति। जिसने भी पहले तीरंदाजी सीखी और बाद में छोड़ दी, उसने मेरी अवज्ञा की है।'' **(माजाह, खं. 2, पृ. 178)**

20. जिहाद के लिए प्रलोभन एवं प्रेरणा

1. ¶जो भी व्यक्ति चालीस दिन या चालीस रात युद्ध में भाग लेता है उसे 'जन्नत' में हीरा, मूंगा व मोतियों से जड़ा हुआ सोने का खज़्भा मिलेगा। वह एक ऐसे महल में रहने का सुख भोगेगा जिसके सत्तर हज़ार दरवाज़ें हैं और प्रत्येक दरवाज़े पर एक-एक हूरी उसकी पत्नी के रूप में उसकी सेवा को तैनात होगी।¸ **(माजाह, खंड 2, पृ. 169)**

2. ¶पैगज़्बर ने कहा ''यदि कोई मनुष्य किसी जिहाद में सिर्फ इतनी देर के लिए भाग लेता है जितना समय कि ऊंटनी का दूध निकालने में लगता है तो वह 'जन्नत' जाने का अधिकारी हो जाता है।'' **(माजाह, खंड 2, पृ. 173)**

3. ¶पैगज़्बर ने कहा कि ''(जिहाद में) एक शहीद ईमान की भड़कीली पोशाक़ से सुसज्जित होता है, उसकी हूरियों के साथ शादी कर दी जाती है और वह अल्लाह की आज्ञा से अन्य सत्तर लोगों की क़ियामत के दिन जन्नत भेजने की मध्यस्थता करने का अधिकारी हो जाता है।'' **(माजाह, खंड 2, पृ. 174)**

4. ¶पैगज़्बर ने कहा कि ''जो कोई किसी व्यक्ति की (युद्ध में) हत्या कर देता है तो वह मारे गए व्यक्ति की सज़्पत्ति का स्वामी हो जाता है।'' **(माजाह, खंड 2, पृ. 182)**

5. ¶पैगज़्बर ने कहा कि ''सभी शहीद हीरा-मोती की बनीं सीटों पर, अल्लाह के सिंहासन के बिल्कुल पास बैठेंगे।'' **(हदीस ए कुदसी 16 : 14)**

6. ¶एक आदमी, जो खजूर खा रहा था ने, पैगज़्बर मुहज़्मद से पूछा ''यदि मैं जिहाद में मारा जाऊं तो कहां जाऊंगा ? पैगज़्बर ने जवाब दिया ''जन्नत में''। उस आदमी ने (खजूर बिना खाए) उन्हें फेंक दिया और युद्ध में लड़ा, जब तक कि मारा नहीं गया।'' **(मुस्लिम, [kaM 3 % 4678] i`- 1266)**

7. ''जो कोई अल्लाह के मार्ग में युद्ध करने जाता है, उस पर 'ईमान' लाता है और अपने पैगज़्बर की सच्चाइयों को मानता है, उसकी समस्याओं का सारा जिज़्मा अल्लाह ने ले रखा है, उसकी देखभाल की जिज़्मेदारी अल्लाह की है और वह उसे या तो (मरने पर) 'जन्नत' दिलवा देता है या (जीवित रहने पर) उसे फिर घर उसके वापिस लाएगा, पुरस्कार (अथवा माले गनीमत) सहित।'' **(मुस्लिम, [kaM % 3 % 4626] i`a- 1256)**

8. ¶अल्लाह के मार्ग में लड़ने पर पाए गए प्रत्येक जज़्म 'क़ियामत के दिन' वैसे ही उभरेंगे जैसे लगे थे, और उनका रंग खून के रंग का होगा लेकिन उसकी खुशबू कस्तूरी के समान होगी।'' **(मुस्लिम, [kaM&3 % 4630] i`a- 1257)**

9. ¶अल्लाह के मार्ग में 'जिहाद' के लिए सुबह या शाम को जाना] दुनिया व उसके सभी सुखों से बेहतर पुरस्कार है।¸ **(मुस्लिम, [kaM&3 % 4639] i`a- 1259)**

10. ¶जन्नत का निवास तलवारों के साये से होता है।¸ **(बुखारी, खंड-4 % 73 i`a- 55)**

11. पैगज़्बर ने कहा ''जो व्यक्ति प्रसन्नता से अल्लाह को अपना स्वामी, 'इस्लाम' को अपना मज़हब, और मुहज़्मद को अपना पैगज़्बर मान लेता है, वह निश्चय ही 'जन्नत' में घुसने का अधिकारी हो जाता है.....(फिर) भी एक ऐसा कार्य है जो 'जन्नत' में भी उसकी श्रेणी सौ गुनी ऊंचा उठा देता है और इस एक श्रेणी की ऊंचाई

दूसरे से इतनी अधिक होती है जितनी कि पृथ्वी से लेकर आसमान तक.....वह कार्य क्या है?....अल्लाह के मार्ग में जिहाद! अल्लाह के मार्ग में जिहाद!'' **(मुस्लिम, खंड-3 % 4645] i`- 1260)**

12. ¶पैगज़्बर ने कहा कि ''पंन्द्रह साल का आदमी (गैर-मुसलमान से) युद्ध करने योग्य है, मगर चौदह का नहीं।'' **(मुस्लिम, [kaM&3 % 4605] i`- 1253)**

13. ¶पैगज़्बर ने कहा ''लड़ाई के मैदान में एक रात भी अल्लाह का सैनिक बनकर, घर बैठे दो हजार वर्ष तक उसकी प्रार्थना करने से बेहतर है।'' **(माजाह, खंड 2 पृ. 166)**

14. ¶पैगज़्बर ने कहा ''जो व्यक्ति समुद्री लड़ाई में जो शहीदी पाता है, वह मैदानी लड़ाई में दो शहीदियों के बराबर होती है।¸ **(माजाह, खंड-2, पृ. 168)**

15. ¶पैगज़्बर ने कहा ''जिस किसी ने एक घोड़े को केवल 'जिहाद' में इस्तेमाल के उद्देश्य से पाला है तो उसको खिलाए प्रत्येक दाने के बदले अल्लाह उसे एक-एक सद्गुण देगा।'' **(माजाह, खंड-2, पृ. 172)**

21. जिहादियों के लिए अल्लाह के पुरस्कारों का आश्वासन

1. ¶तो जो लोग सांसारिक जीवन के बदले 'आख़िरत' का सौदा करें, उन्हें चाहिए कि वे अल्लाह के मार्ग में युद्ध करें। जो अल्लाह के मार्ग में युद्ध करेगा तो चाहे वह मारा जाए या विजयी हो, उसे जल्द हम बड़ा प्रतिदान प्रदान करेंगे।¸ **(4 : 74, पृ. 234)**

2. ¶बिना किसी आपत्ति के बैठे रहने वाले 'मोमिन' और अपने धन और प्राणों के साथ अल्लाह के मार्ग में 'जिहाद' करने वाले बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने बैठे रहने वालों की अपेक्षा , अपने धन और अपने प्राणों से 'जिहाद' करने वालों का एक दर्जा बड़ा रक्खा है।¸ **(4 : 95, पृ. 238)**

3. ¶और जो कोई अपने घर से अल्लाह और उसके 'रसूल' की ओर 'हिजरत' करने निकले, फिर उसकी मृत्यु आ जाए, तो उसका प्रतिदान अल्लाह के जिज़्मे हो गया।¸ **(4 : 100, पृ. 239)**

4. ¶जो लोग 'ईमान' लाए और 'हिजरत' की और अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जानों से 'जिहाद' किया, अल्लाह के यहाँ (उनके लिए) बड़ा दर्जा है। और वहीं हैं जो सफलता प्राप्त करने वाले हैं। उन्हें उनका 'रब' शुभ-सूचना देता है, अपनी दयालुता और रमाजंदी की, और ऐसे बागों (जन्नत) की जिनमें उनके लिए स्थायी सुख है, उनमें वे सदैव रहेंगे। निसंदेह अल्लाह के पास बड़ा बदला (इनाम) है।¸ **(9 : 20-22, पृ. 370)**

5. ¶और जिन लोगों ने अल्लाह के मार्ग में घर-बार छोड़ा, फिर कत्ल कर दिए गये या मर गये, अल्लाह उन्हें अच्छी रोज़ी प्रदान करेगा।¸ **(22 : 58, पृ. 598)**

22. अल्लाह का जिहादी के जीवित बचने पर लूट का माल देने का आश्वासन

1. ¶और जान लो कि जो चीज 'ग़नीमत' के रूप में तुमने प्राप्त की है, उसका पाँचवा भाग अल्लाह का, 'रसूल' और ('रसूल' के) नातेदारों का, और अनाथों और मुहताजों और मुसाफ़िर का है।¸ **(8 : 41, पृ. 354)**

2. ¸और उसने तुज़्हें उनकी धरती और उनके घरों और उनके मालों का वारिस बना दिया, और उस भूमि का भी जिस पर तुमने पग नहीं रक्खा।¸ **(33 : 27, पृ. 749)**

3. ¶अल्लाह अपन 'रसूले' को बस्ती वालों से जो कुछ 'फै', (बिना लड़े प्राप्त माले-गनीमत) प्राप्त कराए, वह अल्लाह का हक़ है और 'रसूल' का और ('रसूल' के) नातेदारों और यतीमों और मुंहताजों और मुसाफिरों का, ताकि वह (माल) तुझारे मालदारों ही के बीच चक्कर न खाता रहे और 'रसूल' तुझें जो कुछ दे, उसे ले लो और जिस चीज से तुझें रोक दे, उससे रुक जाओ।¸ **(59 : 7, पृ. 1023)**

23. अल्लाह का जिहाद में मारे गयों के लिए 'जन्नत' में भोग-विलास का आश्वासन

1. ¶निस्संदेह अल्लाह ने 'ईमान' वालों से उनके प्राणों और उनके मालों को इसके बदले में खरीद लिया है कि उनके लिए 'जन्नत' है : वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं तो वे मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं। यह अल्लाह के ज़िज़्मे ('जन्नत' का) एक पक्का वादा है 'तौरात' और 'इंजील' और 'कुरान' में। और अल्लाह से बढ़कर अपने वादे को पूरा करने वाला कौन हा सकता है ?¸ **(9 : 111, पृ. 388)**

2. ¶और यदि तुम अल्लाह के मार्ग में मारे गए या मर गए, तो अल्लाह की क्षमा और दयालुता उन सब चीजों से उत्तम है जिन्हें ये लोग इकठ्ठा करते हैं। और चाहे तुम मरे या मारे गए अल्लाह ही के पास इकठ्ठे किए जाओगे।¸ **(3 : 157-158, पृ. 209)**

3. ¶जो हमारी 'आयतों पर ईमान' लाए और 'मुस्लिम' थे—दाखिल हो जाओ 'जन्नत' में पूरी खुशियों के साथ तुम और तुझारे संघाती (पत्नियाँ)। उस ('जन्नत वालों) के आगे सोने की तश्तरियों और प्याले गर्दिश करेंगे, और वहाँ हर वह चीज़ होगी आत्माएं जिसे चाहें और आँज़ें जिससे लज्ज़त पाएं और तुम उसमें सदैव रहोगे और यह वह 'जन्नत' है जिसके तुम वारिस बनाए गए उन कर्मों के बदल में जो तुम करते थे। तुझारे लिए यहाँ बहुत से मेवे हैं जिन्हें तुम खाओगे।¸ **(43 : 69-73, पृ. 897)**

4. ''हमने दे रक्खा है उन्हें मेवे और मांस जैसा वे चाहते हैं........उनके पास उनके (सेवक) लड़के आ जारहे हैं, वे ऐसे (सुन्दर) हैं जैसे धराऊ (छिपे) मोतीA¸ **(52 : 24, पृ. 973)**

5. ''और जो सब्र उन्होंने किया था उसके बदले में उन्हें 'जन्नत' और रेशमी कपड़े प्रदान किए गए......और उनके पास ऐसे लड़के आ&जा रहे हैं जिनकी अवस्था सदा एक ही रहेगी, तुम उन्हें देखो तो समझोगे कि मोती बिखरे हुए हैंA¸ **(76 : 12-19, पृ. 1110)**

24. इस्लामी 'जन्नत' का स्वरुप

1. ¶उनके लिए जानी-बूझी रोज़ी है, मेवे। और उनका सज़्मान किया जाएगा नेमत-भरी 'जन्नतों' में, तज़्तों पर आमने-सामने बैठे होंगे; निथरी बहती (शराब के स्रोत) से मद्य पात्र भर-भर कर उनके बीच फिराये जायेंगे, उज्जवल, पीने वालों के लिए आस्वाद, न उसमें कोई खराबी होगी और न वे उससे मतवाले होगें और उनके पास निगाहें बचाने वाली, (लज़ीली) सुन्दर आँखों वाली स्त्रियां होगी, ऐसी (निर्मल) मानों छिपे हुए अंडे हैं।¸ **(34 : 41-49, पृ. 801)**

2. ¶और डर रखने वालों के लिए निश्चय ही अच्छा ठिकाना है, सदैव रहने की 'जन्नतें', जिनके द्वार उनके लिए खुले होंगे, उनमें, वे तकिया लगाए बैठे होंगे, वहाँ वे खूब मेवे और पेय मंगवाते होंगे और उनके पास निगाहें बचाये रखने वाली (लजीली) समायु, स्त्रियाँ होगी। यह है वह कुछ जिस का, 'हिसाब के दिन' के लिए तुमसे वादा किया जा रहा है। यह हमारा दिया हुआ है, जिसका कभी अन्त न होगा।¸ **(38 : 49-54, पृ. 823-824)**

3. ¶निश्चय ही अल्लाह का डर रखने वाले ऐसे स्थान में होंगे जहाँ कोई ख़टका न होगा। बाग़ों और जल-स्रोतों के बीच, पतले और गाढ़े रेशमी वस्त्र पहनेंगे, और एक दूसरे के आमने-सामने होंगे। यह होगा! और हम उनका विवाह बड़ी और सुन्दर आंखों वाली परम रूपवती स्त्रियों से कर देंगे। वे वहाँ निश्चिन्तता पूर्वक हर प्रकार के मेवे तलब करते रहेंगे। वहाँ वे मृत्यु का मज़ा कभी न चखेंगे, बस पहली मृत्यु (दुनिया में) जो आ चुकी वह आ चुकी।¸ **(44 : 51-57, पृ. 907-908)**

4. ¶उस 'जन्नत' का हाल यह है कि जिसका वादा डर रखने वालों से किया गया है, उसमें पानी की नहरे हैं जिसमें सड़ायँध नहीं, और दूध की नहरें हैं जिनका मज़ा बदला नहीं, और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट हैं और साफ़-सुथरे शहद की नहरें है; और उनके लिए वहाँ हर प्रकार के फल है, और क्षमा उनके 'रब' की ओर से।¸ **(47 : 15, पृ. 931)**

5. ¶और जो कोई अपने 'रब' के आगे खड़े होने से डरा, उसके लिए दो उद्यान हैं,.....वे फैली हुई टहनियों वाले हैं।.....इनमें दो स्रोत प्रवाहित हैं.......इनमें हर मेवे दो-दो प्रकार के हैं।....वे ऐसे बिछोनों पर तकिया लगाए हैं जिनके अन्दर के हिस्से दबीज़ रेशम के हैं और इन उद्यानों के फल नीचे लटक रहे हैं।.....इनमें निगाह बचाए रहने वाली (लज्जावती) स्त्रियां हैं जिन्हें इनसे पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया और न किसी 'जिन्न ने......(सुन्दरता में) मानो वे लालमाणि और प्रबाल हैं।...इनके सिवा दो उद्यान और भी है.....वे बहुत ही हरे-भरे हैं.....इनमें दो उबलते स्रोत हैं.....इनमें मेवे, और खजूर और अनार हैं......इनमें भली और सुन्दर स्त्रियां हैं...सुन्दर आंखों वाली (मृगनैनी) परम रुपवती स्त्रियां है खेमों के भीतर ठहरी रहने वाली.....जिन्हें इनसे पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया है और न किसी जिन्न ने.....वह हरी-भरी मसनदों और अच्छे-अच्छे कालीनों पर टेक लगाए हुये हैं, बताओ तुम अपने 'रब' के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो?¸ **(55 : 46-77, पृ. 997-998)**

6. ¶निस्संदेह डर रखने वालों के लिए सफलता है—बाग हैं, और अंगूर और नवयुवतियाँ समान आयुवाली, और छलकता मद्य-पात्र, वे वहाँ कोई बकवाद नहीं सुनेंगे और न कोई झूठ बदला है तुम्हारे 'रब' की ओर से—पुरस्कार हिसाब से।¸ **(78 : 31-36, पृ. 1120)**

7. ¶पैगम्बर ने कहा "जन्नत में प्रत्येक आदमी की दो-दो पत्नियां होगीं। उसने यह भी कहा "जो भी जन्नत में प्रवेश करेंगे उनके चेहरे आसमान में सितारों की तरह चमकीले होंगे। वे न पैशाब करेंगे, न पारवाना, और न वे किसी बीमारी से ग्रसित होंगे और न थूकेंगे और उनके कंघे सोने के होंगे और उनके पसीने में कस्तूरी की सुगंध होगी और उनकी पत्नियां बड़ी-बड़ी आंखों वाली कुंवारियाँ होंगी और वे स्वयं एक जैसे होंगे अपने पूर्वजों (आदम) की तरह साठ क्यूबिट यानी 100 फुट लम्बे होंगे।¸ **(मुस्लिम] [kaM&4 % 6793&95] i`- 1781&82)**

8. ¶पैगम्बर ने कहा "जन्नत में प्रत्येक की दो-दो पत्नियों होंगी जिनमें आपस में विवाद नहीं होगा और उनके दिलों में नफ़रत नहीं होगी" जब उनसे पूछा गया कि जब पारवाना नहीं होगा तो खाए गए खाने का क्या होगा? तो पैगम्बर ने जबाब दिया कि उनका भोजन डकार लेने से पच जाएगा।" **(मुस्लिम, [kaM&4 % 6797-98, i`a- 1782&83)**

9. ¶पैगज़्बर ने कहा कि ''जन्नत में तुम कभी बीमार नहीं होगे, तुम वहाँ सदा रहोगे और तुझ्हें कभी मृत्यु नही होगी। तुम वहाँ सदा जवान रहोगे और कभी बूढ़े नहीं होगे तुम वहाँ सज़्पन्नता के साथ रहोगे और कभी अभाव ग्रस्त नहीं होगे।¸ **(मुस्लिम, खंड-4 % 6805] i`a- 1785)**

10. ¶पैगज़्बर ने कहा कि 'जन्नत' में खोखले मोती का एक शामियाना होगा जो लज़्बाई और चौड़ाई दोनों में साठ-साठ मील का होगा ताकि उसके प्रत्येक कोने पर 'ईमान' वालों का एक-एक परिवार दूसरों की निगाह से दूर रह सके।¸ **(मुस्लिम, खंड-4 % 6805] i`- 1785)**

11. 'जन्नत' में प्रत्येक पुरुष को एक सौ पुरुषों के बराबर वीर्यवत्ता (शक्ति) दी जाएगीA¸ **(तिर्रमज़ी] खं. 2 : पृ. 138)**

12. ¶प्रत्येक पुरुष जो जन्नत में प्रवेश करेगा, मरते वक्त उसकी कोई भी उम्र क्यों न हो, वह वहाँ तीस वर्ष का हो जाएगा और फिर बुढ़ापा नहीं आएगा और उसे बहत्तर (72) हूरियां (सुन्दरियां) दी जाएंगीA¸ **(तिर्रमिजी] खं. 2 : पृ. 35-40)**

13. ¶पैगज़्बर मुहज़्मद ने आयशा को कहा ''क़ियामत के दिन लोग नंगे बदन, नंगे पांव और बिना खतना किए एक स्थान पर जमा किए जायेंगे। आयशा ने पूछा क्या वहाँ स्त्रियां और पुरुष सभी नंगे और एक दूसरे की ओर देखेगें ? तब पैगज़्बर ने जबाब दिया कि उनका तब एक दूसरे की ओर देखना तो गंभीर मामला होगा।¸ **(मुस्लिम, खंड-4 % 6844] i`a- 1791)**

25. 'जिहाद' न करने वाले मुसलमानों पर अल्लाह की फटकार

1. ¶हे 'ईमान' लाने वालो'! तुझ्हें क्या हो गया कि जब तुमसे कहा गया कि अल्लाह के मार्ग में निकलो, तो तुम धरती पर ढ़ह गए। क्या तुम 'आख़िरत' को छोड़कर सांसारिक जीवन पर राज़ी हो गए? तो सांसरिक जीवन की सुख सामग्री 'आख़िरत' की अपेक्षा बहुत थोड़ी है।¸ **(9 : 38, पृ. 374)**

2. ¶यदि तुम न निकलोगे तो अल्लाह तुझ्हें दु:ख देने वाली यातना देगा, और तुझ्हारी जगह किसी और गिरोह को ले आएगा और तुम अल्लाह का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे।¸ **(9 : 39] पृ. 374)**

उपरोक्त उद्धरणों से सुस्पष्ट है कि इस्लामी जिहाद का उद्देश्य एक तरफ मुसलमानों में, आपस में, भाई-चारा, प्रेम व कठोर इस्लामी अनुशासन लाना है, तो वहीं दूसरी तरफ गैर-मुसलमानों को साम-दाम दण्ड-भेद से इस्लाम स्वीकार कराकर अथवा उनकी हत्या करके सारे विश्व में इस्लामी राज्य स्थापित करना है।

26. स्वयं पैगज़्बर मुहज़्मद द्वारा जिहादी युद्ध के आदर्श

1. इमाम नबावी के अनुसार बयासी हमलों में से छब्बीस 'गज़ावर' थे यानी जिनमें स्वयं पैगज़्बर मुहज़्मद ने नेतृत्व किया और छप्पन 'सराया' थे यानी जिनमें पैगज़्बर के नियुक्त किए व्यक्तियों ने हमलों का नेतृत्व किया। पैगज़्बर के मदीना में रहते समय में (622-632 ई.) ''औसतन हर पैंतालीस दिन में एक हमला हुआ।'' **(नोट सं. 2283, मुस्लिम, 4469&70, i`a- 1211 खंड-3)**

2. ¶पैगज़्बर मुहज़्मद ने कहा ''अल्लाह की राह में और अल्लाह के लिए युद्ध करो। उनके विरुद्ध युद्ध करो जो अल्लाह पर 'ईमान' नहीं लाते हैं। माले-गनीमत में गड़बड़ी मत करो, और पवित्र युद्ध (होली वार) करते रहो। जब तुझ्हारा मुक़ाबला शत्रुओं से हो जो कि बहुदेवतावादी हैं तो उनके सामने तीन विकल्प रखो—

पहला, उनको इस्लाम अपनाने को कहो, यदि वे मान जाऐं तो उन्हें अपना लो, तब उनको अपना देश छोड़कर मुजाहिदों के देश मदीना आने को कहो। (क्योंकि मुहज़्मद ने मदीना में रहने के लिए कहा; प्रारज़्भिक दिनों में किसी का मदीना में आकर रहना, इस्लाम स्वीकारने का स्वरुप समझा जाता था), यदि वे इस्लाम स्वीकार न करें तो उनसे जिज़या मांगो, और यदि जिज़या भी न देना चाहें, तो अल्लाह से मदद मांगो और उनसे युद्ध करो।'' **(मुस्लिम, खंड-3 % 4294] i`a- 1137)**

3. ¶ऐसी ही तीन शर्तों का प्रस्ताव हदीस इब्न-ए-माजाह **(खंड-2, पृ. 188-189)** में इस प्रकार दिया है : ''जब तुम किसी शत्रु (ग़ैर-मुस्लिम) से मिलो तो उसके सामने निज़्नलिखित तीन विकल्प रखो—(1) उन्हें इस्लाम कबूल करने को कहो जिसका वास्तविक अर्थ मुहज़्मद का नेतृत्व स्वीकार करना है। (2) यदि वे इस शर्त को न मानें तो उन्हें आत्म समर्पण सहित जिज़या देना होगा और, (3) यदि वे इन दोनों विकल्पों को भी न मानें तो उनके साथ निर्दयता के साथ युद्ध करो।''

4. ¶पैगज़्बर मुहज़्मद के कहा कि वह *माही* यानी गैर-मुसलमानों का विनाशक है। ''अल्लाह मेरे माध्यम से सभी गैर-मुस्लिमों का नाश कर देगा।'' **(मलिक eqoV~Vk 594, 1831)**

5. ¶पैगज़्बर ने कहा ''अल्लाह के लिए l;kj सवोत्तम कार्य है।'' **(मिश्कत, 32)**

6. मुहज़्मद ने कहा ''मैं अल्लाह के मार्ग में लड़ना और मारा जाना पसन्द करता हूँ तथा लड़ना और फिर मारा जाना चाहता हूँ एवं फिर बार-बार लड़ना और मारा जाना पसन्द करता हूँ।¸ **(मुस्लिम, खंड-3 % 4626] i`- 1256)**

7. ''मैं अरेबिया प्रायद्वीप से सभी यहूदियों और ईसाइयों को बाहर निकाल दूँगा और मुसलमानों के अलावा किसी को नहीं रहने दूंगा''। पैगज़्बर मुहज़्मद ने (उमर को)] घोषणा करते हुए कहा।¸ **(मुस्लिम, खंड-3 % i`- 1162&1163)**

8. ''पैगज़्बर मुहज़्मद ने सबसे पहले बानू नाज़िर क़बीले को मदीना से निकाला और कुरेज़िया कबीले को रहने दिया और उन्हें तब तक संरक्षण दिया जब तक वे उसके विरुद्ध नहीं लड़े। तब उसने उनके पुरुषों को कत्ल कर दिया और उनकी स्त्रियों, बच्चों व सज़्पत्ति को मुसलमानों में बांट दिया.....अल्लाह के 'रसूल' ने मदीना के सभी यहूदियों को बाहर निकाल दिया, बानू कैनूका और बानू हरीथा, के यहूदियों को और जो कोई भी यहूदी मदीना में बचा उस सबको बाहर निकाल दिया।'' ऐसा हमें उमर के पुत्र अब्दुल्ला ने बताया।¸ **(मुस्लिम, [kaM&3 : 4346 i`- 1161)**

तलवार द्वारा इस्लाम प्रसार का विद्वानों व आक्रान्ताओं द्वारा पुष्टि

इस सत्य को इस्लाम के विद्वानों ने भी माना है कि पैगज़्बर मुहज़्मद ने अल्लाह ने नाम पर तलवार से इस्लाम का विस्तार किया है। मौलाना अबुल आला मैदूदी ने अपनी पुस्तक ''अy-जिहाद-फिल-इस्लाम'' में लिखा है :

''**रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तेरह वर्ष तक अरबवासियों को इस्लाम की ओर बुलाते रहे। उपदेश करने का जो भी प्रभावी ढ़ंग हो सकता था उसे आपने अपनाया। प्रबल प्रमाण और प्रत्यक्ष तर्क उनके सज़्मुख रखे। वाणी की मधुरता, भाषा की ज़ावुकता तथा ओजस्वी भाषणों द्वारा हृदयों को द्रवित करने का प्रयत्न किया। अल्लाह की ओर से अलौकिक चमत्कार दिखाए, अपने पवित्र जीवन-**

चरित्र का श्रेष्ठ आदर्श प्रस्तुत किया और कोई साधन ऐसा नहीं छोड़ा जो सत्य को प्रत्यक्ष और प्रतिस्थापित करने में सहायक हो सकता था।

परन्तु आपकी कौम ने आपकी सच्चाई सूर्य की भाँति प्रमाणित होने के पश्चात् भी आपके निमंत्रण को स्वीकार करने से इंकार कर दिया। उपदेश और शिक्षा की असफलता के उपरान्त *आपने हाथ में तलवार उठाई* जिससे लोगों के दिलों से धीरे-धीरे बुराई और शरारत की जंग छूटने लगा। शरीर से हानिकारक तत्व स्वतः ही बाहर निकल गए और आत्मा की संकीर्णता दूर हो गई और केवल यही नहीं कि आँखों से अंधकार का पर्दा उठाकार सत्य का प्रकाश पूरी तरह प्रकट हो गया बल्कि गर्दनों में अकड़ और मस्तिष्क का घमण्ड, जो सत्य के उदयोपरान्त भी मानव को उसके झुकने से रोकता है, शेष न रहा''.....''अरब की भाँति दूसरे देशों में भी इस तेजी से फैला कि एक शताब्दी के अन्दर संसार का एक चौथाई भाग मुसलमान बन चुका था। इसका मूल कारण यही था कि इस्लाम की तलवार ने अन्धकार के वे सारे आवरण छिन्न-भिन्न कर दिए जो दिलों में भरे पड़े हुए थे''। *(शान्ति का अवतार, प्रकाशक, नाजिर नशर-रे-इशाअत, कादियान,* पृ. 7-8 से)

तैमूरलिंग ने, 1398-99, में भारत पर जो हमले और कत्लेआम किए उसकी प्रेरणा कुरान थी। ऐसा तिमूर ने अपनी जीवनी ''मुल फुज़ात-ई-तिमुरी'' में स्वयं स्वीकारा है :

''लगभग उसी समय मेरे मन में एक अभिलाषा आई कि मैं गैर-मुसलमानों के विरुद्ध एक अज़ियान प्रारज़्भ करूँ और 'गाजी' बन जाऊँ क्योंकि मेरे कानों में यह बात पहुँची थी कि अविश्वासियों का क़ातिल 'गाज़ी' हो जाता है और यदि वह स्वयं मर जाता है तो 'शहीद' हो जाता है। इसी कारण मैंने एक निश्चय किया किन्तु मैं अपने मन मैं अनिश्चित था कि मैं चीन के अविश्वासियों की ओर प्रारज़्भ करूँ अथवा भारत के अविश्वासियों और बहुदेवतावादियों की ओर। इसी उद्देश्य से मैने कुरान से शकुन खोजना चाहा और जो आयत निकली वह इस प्रकार थी, ''ए पैगज़्बर! अविश्वासियों (गैर-मुसलमानों) के विरुद्ध युद्ध करो और उनके प्रति कठोरता का व्यवहार करो (कुरान मजीद, सूरा 66 आयत 9)। मेरे महान् अफसरों ने बताया कि हिन्दुस्तान के निवासी अविश्वासी और बहुदेवतावादी हैं। सर्व शक्तिमान अल्लाह के आदेशानुसार आज्ञापालन करते हुए मैंने उनके विरुद्ध अज़ियान की आज्ञा दे दी'' (*तिमूर की जीवनी, एवं इलियट और डाउसन, खंड 3, पृ.* 394-95)

ब्रिगेडियर एस. के. मलिक ने तो अपनी पुस्तक 'कुरानिक कन्सेप्ट आफ वार' में जिहाद सज़्बन्धी युद्ध के सभी पहलुओं का, कुरान के अनुसार, विस्तृत विवेचन किया है।

अंग्रेजी शब्द कोशों एवं विश्व कोशों में जिहाद का अर्थ

'जिहाद'—''इस्लाम के नाम पर धार्मिक कर्त्तव्य के रूप में लड़ा जाने वाला एक पवित्र युद्ध है। यह कठोर प्रयास या युद्ध क्रिया, पवित्र युद्ध की भावना से की जाती है''—(**वेबेस्टर्स थर्ड न्यू इन्टरनेशनल डिक्शनरी, पृ. 1216)**

'जिहाद'—''मुसलमानों के लिए पवित्र कर्त्तव्य के रूप में किए जाने वाला एक धर्मयुद्ध है''—**(दी रैन्डम हाउस डिक्शनरी आफ दी इंगलिश लैंग्वेज, पृ. 1029)**

'जिहाद' —''एक पवित्र युद्ध है जिसकी मान्यता इस्लाम ने उनके विरुद्ध दी है जो कि इसकी शिक्षाओं को नहीं मानते है''—**(कॉलिन्स कोबिल्ड इंग्लिश लैंग्वेज डिक्शनरी, पृ. 781)**

'जिहाद'—''इस्लाम की तरफ से, एक कर्त्तव्य के रूप में, लड़ा जाने वाला पवित्र युद्ध है'' (**लौंगमैन डिक्शनरी ऑफ दी इंग्लिश लैंग्वेज, पृ. 849**)

'जिहाद' —''शब्द अरबी भाषा की एक क्रिया है जिसका अर्थ है संघर्ष एवं लगातार प्रयास करना; तथा इस्लामी सज़्यता के इतिहास में इस्लाम धर्म के विरोधियों व गैर-मुसलमानों, तथा मुस्लिम समाज और राज्य के विरोधियों के विरुद्ध युद्ध करना है। प्रारज़्भिक इस्लामी इतिहास में 'जिहाद' का अर्थ होता था पवित्र युद्ध, और कठोर इस्लामी तथ्यानुसार इसका सीधा सज़्बंध मुसलमानों के हथियारों द्वारा इस्लामी पंथ का प्रसार करने से है। यह खारिजितियों (एक कबीला), जो कि युद्धप्रिय विद्रोहियों का एक दल था, का कर्त्तव्य था और जिहाद को आदेश या अनिवार्य कर्त्तव्य समझा जाता था और उनकी दृष्टि में यह इस्लाम का छठा स्तज़्भ था।'' **(कौलियर्स ऐन्साइल्कोपीडिया, खंड 13, पृ. 7)।**

जिहाद के बारे में इसी प्रकार का विवरण 'दी न्यू ऐन्साइलोपीड़िया खंड 6*, ¶दी कैज़्ब्रिज ऐन्साइलोपीडिया (पृ. 637)¸, ¶एकेमेडिक अमेरिकन एन्साईलोपीडिया (पृ. 418)¸ तथा ¶कॉन्साइज़ ऐन्साइलोपोडिया ऑफ इस्लाम (पृ. 209)¸ में Hkh दिया गया है।

सार रूप में, गैर-मुसलमानों के प्रति जिहाद की अवधारणा को समझने के लिए इस्लाम के विद्वान पी. टी. ह्यूज की ''डिक्शनरी ऑफ इस्लाम' में दी गई 'जिहाद' की परिभाषा को यहाँ प्रस्तुत करना उपयोगी होगा।

''इस्लाम के सर्व सत्तात्मक स्वरुप का सुस्पष्ट दर्शन जिहाद की अवधारणा की अपेक्षा और कहीं अधिक साफ़ दिखाई नहीं देता है। यह एक धर्म युद्ध है जिसका अन्तिम उद्देश्य समस्त विश्व को जीतना और फिर उसे एक सच्चे पंथ तथा अल्लाह के कानून के हवाले कर देना है। सत्य केवल इस्लाम को ही दिया गया है; इसके बाहर मोक्ष की कोई सज़्भावना नहीं है। प्रत्येक ईमान वाले (मुसलमान) का यह पवित्र कर्त्तव्य और आवश्यक धार्मिक कार्य है कि वे समस्त मानवजाति तक इस्लाम को पहुँचायें जैसा कि कुरान और हदीसों में सुनिश्चित किया गया है। जिहाद एक दैवी सिद्धान्त है जिसका उद्देश्य, विशेषकर इस्लाम का प्रसार करना है। मुसलमानों को अल्लाह के नाम प्रयास, युद्ध और हत्या करना चाहिए।¸ ***(पृ. 243 से अनूदित)***

विद्वानों की दृष्टि में इस्लामी जिहाद

1- मुस्लिम विद्वान ***अनवर शेख*** का कथन है कि—'इस्लाम में जिहाद की अवधारणा को ''अल्लाह के मार्ग में पवित्र युद्ध'' एवं 'गैर-ईमान वालों (गैर-मुसलमानों) के विरुद्ध एक रक्षात्मक संघर्ष' के रुप में प्रस्तुत किया गया है। इन दोनों कथनों में से किसी में कुछ भी सच्चाई नहीं है। इतिहास साफ़ तौर पर बतलाता है कि यह पूरी तरह से उन गैर-मुस्लिमों के विरुद्ध एक आक्रामक युद्ध है जो कि इस्लामी पंथ को नहीं स्वीकारते हैं और जो कि अपनी इच्छानुसार ईश्वर की पूजा करना चाहते हैं। लेकिन यह सब अल्लाह को स्वीकार नहीं है जो कि किसी अन्य पंथ के अस्तित्व को नहीं मानता है और तीव्र उत्कंठा के साथ सभी अन्य पंथों को उनके अनुयायियों सहित नष्ट करना चाहता है।¸ **(दिस b"k जिहाद, पृ.1)**

पुनः ''जिहाद का मतलब नरसंहार, अंग-विकृतीकरण और विपत्ति है, न कि यह किसी प्रकार के नैतिक, सामाजिक अथवा मानव कल्याणकारी सेवा के लिए है] जैसा कि मुस्लिम धार्मिक नेता दावा करते हैं।'' **(दिस इज जिहाद, पृ. 5)**

2- **जैक्यूस एलाह** का कहना है कि—''जिहाद एक आवश्यक धार्मिक कर्त्तव्य है। यह उन कर्त्तव्यों का एक अंग है जिन्हें कि एक ईमानवाले (मुसलमान) को अवश्य पूरा करना चाहिए। यह इस्लाम के धर्म प्रसार का एक सामान्य तरीका है।¸ (**बेटयोर्स की पुस्तक ''दि डिलDyइन ऑफ ईस्टर्न क्रिश्चियनिटी, पुस्तक के प्राक्थन से,** पृ. 19)

3- **अयातुल्ला खुमैनी** के अनुसार**—**''जिहाद का अर्थ है गैर-मुसलमानों के प्रदेशों को जीतना.....इस युद्ध में विजय के लिए, इसका अंतिम उद्देश्य पृथ्वी के एक कोने से दूसरे कोने तक कुरानी कानून का प्रभुत्व लाना है।'' **(जिहाद इन वेस्ट, ले. पॉल फ्रेगोसी, पृ. 20)**

4- **मैक्सिम रेडिन्सन** का मत है कि— ''कुछ ऐसे शब्द हैं जो लोगों को आतंकित कर देते हैं। जिहाद उनमें से एक हैA जब सर्बियन नेता बोस्निया की सेना पर शैतानियत लाना चाहते हैं तो घोषणा कर देते हैं कि अलीजा इजेट बेगोविक (बोस्निया का मुस्लिम नेता) ने पवित्र युद्ध जिहाद, जो कि इस्लाम का भयकारी हथियार है, का ऐलान कर दिया है।¸ **(इस्लाम का विशेषज्ञ, 'ली मोंडे' पैरिस के 17. 6. 1994 के अंक से)**।

5- मुसलमानों के जिहाद सज़्बंधी विचारों को ***शेख मुहज़्मद-अस-सलेह-अल-उथेमिन,*** के शब्दों में (*दी मुस्लिम विलीफ* पृ. 22) इस प्रकार कहा गया है—

''हमारी यह सज़्मति है कि जो कोई इस्लाम के अलावा वर्तमान में मौजूद किसी अन्य धर्म जैसे यहूदीमत, ईसाईयत और अन्य (हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म आदि, अनु.) में विश्वास रखता है, वह गैर-ईमानवाला है। उससे पश्चाताप करने के लिए आग्रह करना चाहिए। यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो उसकी धर्मत्यागी के समान हत्या कर देनी चाहिए क्योंकि वह कुरान को नकार रहा है।''

6- जिहाद के बारे में **सहीह बुखारी** का मत है कि—¶अल्लाह की प्रशंसा है कि जिसने अल-जिहाद (अल्लाह के उद्देश्य के लिए लड़ने) का आदेश दिया—(1) हृदय से (भावनाओं और उद्देश्यों सहित), (2) हाथ से (हथियारों से) और (3) वाणी से (प्रवचन, विवेचन, प्रचार आदि से) अल्लाह के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए और जिसने उसे जिहाद को क्रियान्वित किया उसे जन्नत के बागों में बड़े-बड़े कमरों सहित उसे पुरस्कृत किया जाएगा।¸ **(22-40, खंड 1)**

7- जिहाद के विषय में आधुनिक विद्वान् **रूडोल्फ पीटर्स** का मत है कि—

''जिहाद के सिद्धान्त का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य तो यह है कि यह मुसलमानों को गैर-मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध में भाग लेने के लिए लामबन्द कराना और प्रेरित करना है क्योंकि इसे एक धार्मिक कर्त्तव्य की पूर्ति समझा जाता है। इस प्रोत्साहन के लिए यह प्रलोभन बलपूर्वक दिया जाता है कि जो कोई भी युद्ध के मैदान में मारा जाता है, वह शहीद कहलाता है और वह सीधा 'जन्नत' में जाएगा A (गैरमुस्लिमों के विरुद्ध होने वाली लड़ाइयों के अवसर पर कुरान की आयतें और हदीसों से सराबोर धार्मिक पुस्तकें घुमाई व सुनाई जाती हैं जिनमें जिहाद में लड़ने व मिलने वाले पुण्य फलों का विस्तार से वर्णन होता है और जिहाद में मारे गए लोगों को मरणोपरान्त जन्नत में, उनकी प्रतीक्षा कर रहे, सुखों का वर्णन होता है।'' **(जिहाद इन क्लासिकल एण्ड मॉडर्न इस्लाम, पृ. 5)**

8- bस्लामी जिहाद के विषय में, प्रसिद्ध आधुनिक इतिहासकार **डॉ. के. एस. लाल** अपनी पुस्तक **'थ्योरी एण्ड प्रेक्टिस ऑफ़ मुस्लिम स्टेट इन इंडिया'** (पृ. 5.) में इस प्रकार लिखते हैं :

''मुस्लिम सुल्तानों ने अपने इस्लामी कानून (शरियत) के अनुसार और हिन्दू राजाओं ने अपने धर्मशास्त्रानुसार, भारत में राज्य किया। मगर इन दोनों की शासन प्रणाली और युद्ध के नियम एक-दूसरे से पूर्णतया भिन्न थे। कुरान, अन्य धर्मों के अस्तित्व, उनके धार्मिक रीति-रिवाज़ों और उनकी निरंतरता को बने रहने देने की अनुमति नहीं देता है।

कुरान की कुल 6326 आयतों में से लगभग उन्तालीस सौ (3900) आयतें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष ढंग से अल्लाह और उसके 'रसूल' (मुहज़्मद) में 'ईमान' न रखने वालों या काफ़िरों, मुश्रिकों, मुनक़िरों और मुनाफ़िकों से सज़्बन्धित हैं। ये उन्तालीस सौ आयतें मुज़्य रूप से दो प्रकार की हैं। एक श्रेणी की आयतें मुसलमानों से सज़्बन्धित हैं जो अपना 'ईमान' अल्लाह में लाने के कारण इस जीवन में और मरने के बाद भी पुरस्कृत किए जाएंगे, और दूसरी प्रकार की वे हैं जो अल्लाह में गैर-ईमानवालों व काफ़िरों से सज़्बन्धित हैं, जो कि न केवल इस जीवन में सताए जाएंगे बल्कि मरने के बाद 'जहन्नम' की आग में डाले जाएंगे।

कुरान मानव जाति के लिए भाई-चारे के विधान की अपेक्षा युद्ध सज़्बंधी विधि-विधान का ग्रंथ प्रतीत होता है। कुरान का अन्य धर्म वालों के विरुद्ध जिहाद या स्थायी युद्ध का आदेश, पहले भी था और आज भी है। इस्लाम अन्य धर्म वालों के विरुद्ध जिहाद या लगातार युद्ध, करने तथा उन्हें कैद करने, बांधने, कत्ल करने और उन्हें 'जहन्नम' की आग में जलाने की शिफ़ारिश करता है। इससे इस्लाम एक सर्व सत्तात्मक और आतंकवादी धार्मिक पंथ हो जाता है जैसा कि वह अपने जन्म से ही रहा आया है।''

इस संबंध में भारत में पिछले ग्यारह सौ वर्षों तक (700-1800 ई.) इस्लामी राज्यकाल में चली आई इस्लामी जिहाद की व्यावाहरिक झाँकी जय दीप सेन द्वारा लिखित एवं हिन्दू राईटर्स फोरम से प्रकाशित पुस्तक '*भारत में जिहाद*' में देखी जा सकती है।

उपरोक्त उद्धरणों से सुस्पष्ट है कि गैर-मुसलमानों के प्रति इस्लामी जिहाद का असली मतलब इस बात पर निर्भर करता है कि उस देश में मुसलमान बहुसंज़्यक हैं या अल्पसंज़्यक। जहाँ मुसलमान बहुमत में होते हैं तो वहाँ जिहाद का मतलब मुसलमानों के व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन में कुरान, हदीसों एवं पैगज़्बर मुहज़्मद के आदर्शों के अनुकूल उन्नति के प्रयास करना तथा आपसी प्रेम व भाई-चारे को मज़बूत कर मुस्लिम शक्ति को बढ़ावा देना होता है तथा वहाँ सच्ची कुरानी इस्लामी राज्य व्यवस्था को लाना होता है। ऐसे देशों में सच्चे इस्लाम को स्थापित करने के नाम पर शिया-सुन्नी-अहमदियाओं के पारस्परिक संघर्ष को भी जिहाद कहा जाता है।

इसके विपरीत यदि उस देश में मुसलमान अल्पमत में होते हैं जैसा कि भारत, तो जिहाद का मतलब यह होता है कि (1) वहाँ मुसलमान अपने व्यवहार, वाणी, लेखन, प्रवचन आदि से इस्लाम का प्रचार-प्रसार करें, (2) विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक संगठनों के द्वारा मुसलमानों के हितों की रक्षा करें, (3) मुसलमानों के व्यक्तिगत कानूनों को सरकारी तंत्र से मुक्त रखने का प्रयास करें, (4) सभी संभव उपायों द्वारा गैर-मुसलमानों को मुसलमान बनाने की कोशिश करें तथा, (5) वहाँ इस्लामी राज्य स्थापित करने का हर संभव प्रयास एवं संघर्ष जारी रखें जब तक fd वहाँ इस्लामी राज्य स्थापित न हो जाए।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुसलमान युवकों को, अल्लाह के नाम पर, गैर–मुसलमानों से जिहाद करने के लिए यह कहकर प्रोत्साहित किया जाता है कि यदि इस जिहादी संघर्ष में वे सफल हो गए और आगे चलकर यहाँ अल्लाह का राज्य स्थापित हो गया तो वे सभी सांसारिक सुख भोगेंगे और यदि मर भी गए तो सीधे 'जन्नत' को जाएंगे जहाँ वे सभी प्रकार के एSशो–आराम सदैव करते रहेंगे। दूसरी तरफ गैर–मुसलमानों को इस्लाम न स्वीकारने पर मरने के बाद 'जहन्नम' की यातनाओं का भय दिखाया जाता है। मगर आधुनिक विज्ञान भी, सृष्टि भर में कहीं भी स्वर्ग–नरक, 'जन्नत–जहन्नम' आदि की स्थिति का पता नहीं लगा पाया है। फिर भी मुल्ला–मौलवी इस काल्पनिक 'जन्नत' का प्रलोभन देकर युवकों को जिहाद के लिए उकसाते रहते हैं। uxj gnhlksa osQ vuqlkj ftgknh dks tUur fd;ker ckn gh feysxhA

भारत में हिन्दुओं का बहुमत होने के कारण पिछले तेरह सौ वर्षों से इस्लामी खूनी जिहाद लगातार चला आ रहा है। यहाँ हिन्दुओं और बोद्धों पर बिना कोई कारण लगातार अनेक भीषण अत्याचारी हमले किए गए। आज भी भारत विभाजन के फलस्वरुप पाकिस्तान और बंगलादेश दो इस्लामी राज्य बनने के बाद भी बचे–खुचे भारत को इस्लामी राज्य बनाने के लिए जबरदस्त बहुआयामी जिहाद जारी है। मुस्लिम बहुल काश्मीर में आंतकवादी गतिविधियों को मुसलमान खुल्लम–ज़ुल्ला जिहाद कहते हैं। भारत, पाकिस्तान व बंगलादेश के अनेक इस्लामी संगठन भारत के विभिन्न भागों में आंतकवादी गतिविधियों को भी इस्लामी जिहाद कहते हैं। यहाँ तक कि बंगलादेशी मुसलमानों का भारत के इस्लामीकरण के उद्देश्य यहाँ पिछले पचास वर्षों से घुसपैठ करके बसना भी जिहाद का एक अंग माना जाता है।

अत: संक्षेप में जिहाद मुसलमानों के व्यक्तिगत एवं सामाजिक मामलों में एक आन्तरिक संघर्ष व आपसी भाई–चारे का प्रतीक हो सकता है। मगर गैर–मुसलमानों का संदर्भ में जिहाद का स्पष्ट अर्थ गैर–मुसलमानों का धर्मान्तरण, एवं उनसे संघर्ष करना तथा अन्य सभी संभव उपायों द्वारा उनके देश को इस्लामी राज्य बनाने का प्रयास करना है।

इस्लाम एक धर्म प्रेरित राजनैतिक व्यवस्था है जिसका भारत ही नहीं] विश्वभर में कहीं भी, स्थानीय राष्ट्रवाद और सेक्यूलरिज्म में बिल्कुल विश्वास नहीं है। इसका उद्देश्य उस देश की प्राचीन संस्कृति, धर्म एवं परज़्पराओं को मिटाकर इस्लाम, èkeZ अरबी, संस्कृति और अरबी साम्राज्य स्थापित करना है। अत: सभी राष्ट्रीय, धर्मनिरपेक्ष, लोककल्याणकारी एवं मानवतावादी शक्तियों को समस्त पारस्परिक मतभेदों को भुलाकर] एक जुट होकर] इस जिहादी आंतकवाद का हर स्तर पर विरोध करना चाहिए। व्यावहारिक स्तर पर '**जैसे को तैसा**' की नीति अपनाना श्रेयस्कर होगा।

हमें आशा है कि पाठकों को मुसलमानों की] गैर–मुसलमानों के प्रति जिहाद की सच्ची तस्वीर साफ़ हो गई होगी।